पिता को गांधी से लगाव था, तो लगातार मेहनत कर बना दिया गांधी म्यूजियम

(दैनिक मृदुल पत्रिका)

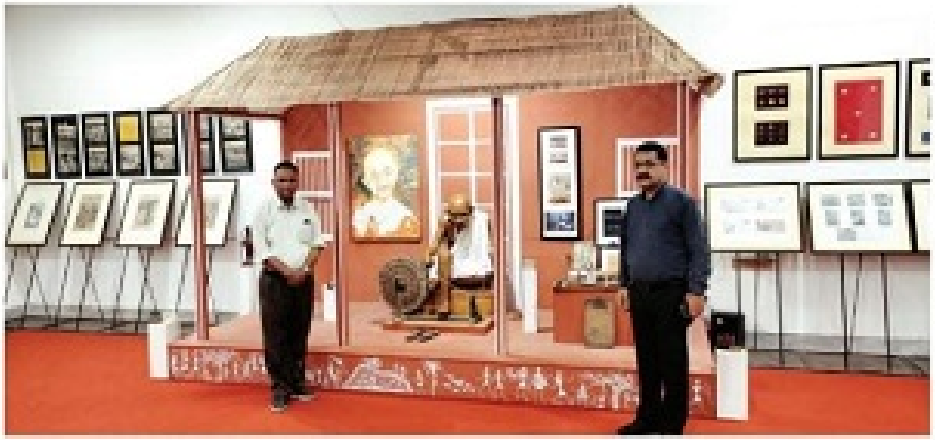

चित्तौड़गढ़। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में जनकल्याणकारी राजस्थान सरकार महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने के लिए नई-नई योजनाएं लागू कर प्रभावी क्रियान्वन सुनिश्चित कर रही है। इसी क्रम में चित्तौड़गढ़ जिले के गंगरार स्थित मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने महात्मा गाँधी से जुड़ी यादों को संजोने के लिए अनूठा कार्य कर दिखाया है जिसकी काफी प्रशंसा हो रही है। यूनिवर्सिटी में बेहद आकर्षक " 'प्रभाश जोशी गांधी म्यूजियम" की स्थापना की गई है।

गांधी म्यूजियम में स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान तत्कालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित महात्मा गांधी से सम्बंधित घटनाओं के समाचारों की मूल कतरनों को शानदार तरीके से सजाया गया है। साथ ही गाँधी द्वारा निकाले गए विभिन्न समाचार पत्र जैसे नवजीवन (अंक- 19 जून 1930), हरिजन (अंक- 13 फरवरी 1949) आदि को भी प्रदर्शित किया गया है, जिसमें गांधी जी के लेख देखे जा सकते हैं। म्यूजियम में कई विदेशी मैगज़ीन एवं पत्र-पत्रिकाओं जैसे- LE MIROIR DU MONDE (पैरिस), Le Petit Journal, La Domenica del Corriere (इटली), फ्रांस इलस्ट्रेशन, अगस्त ग्राफिक सर्वे आदि के कवर पेज हैं जिन पर महात्मा गांधी की तस्वीर छपी हैं। ये मैगज़ीन एवं पत्र-पत्रिकाएँ अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, इटालियन आदि भाषाओं में है। इनका अवलोकन कर प्रतीत होता है कि उस समय गांधी का प्रकाश सिर्फ भारत ही नहीं, पूरे विश्व में फ़ैल चूका था। गाँधी के जीवनकाल को अलग-अलग घटनाओं को तस्वीरों के माध्यम एक क्रम में लगा कर प्रदर्शित किया गया है, जिसमें उनके पुराने अनदेखे फोटो और संक्षिप्त जानकारी है। यहाँ गाँधी पर प्रकाशित कई डाक टिकटों का भी अनोखा कलेक्शन उपलब्ध है। करीब सौ देशों द्वारा महात्मा गांधी पर निकाले गए स्टाम्प का संकलन भी यहाँ देखने को मिलता है। वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (डीन) के निर्देशन में बने इस गांधी म्यूजियम में प्रवेश करते ही साबरमती आश्रम की छोटी-सी झांकी दिखाई देती है, जिसमें महात्मा गांधी को चरखा चलाते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति को रामकृष्ण घोष और उनकी टीम ने बनाया है। मूर्ति के पास गाँधी द्वारा उपयोग में ली गई सामग्रियों की रेप्लिका दिखाई गई है। गांधी की तस्वीर वाले पुराने सिक्कों एवं मेडल का भी यहाँ अनोखा कलेक्शन है। इसके साथ ही गांधी पर प्रकाशित दर्जनों पोस्ट कार्ड एवं लिफाफों को भी संजो कर रखा गया है। यहाँ समाचार पत्र 'द स्टेट्समेन' की दिनांक 31 जनवरी 1948 की प्रति भी संरक्षित है, जिसमें गांधी के शहीद होने की खबर छपी हुई है। गांधी के भाषणों का संग्रह किये हुए कई पुरानी डिस्क भी यहाँ संभाल कर रखी गई है।

म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह बताती हैं कि क्षेत्र के सिद्दीक अहमद मंसूरी का इस संकलन में अहम योगदान रहा है। मंसूरी ने बचपन से ही महात्मा गाँधी से जुड़ी कई महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह किया है, जो इस म्यूजियम को बनाने में काम आया है।

150 चित्रों के माध्यम से दिखाए महात्मा गांधी के आकर्षक हाव-भाव

म्यूजियम में प्रवेश करते ही दर्शक एकाएक स्तब्ध रह जाते हैं, जब उनकी निगाह बाएं ओर स्थित एक दीवार पर जाती है। यहाँ म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह के मार्गदर्शन में ओम प्रकाश साल्वी एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के विभिन्न उम्र में रहे हाव-भाव को सुन्दर चित्रकारी के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाया गया है। विभिन्न मुद्राओं में गांधी जी के हाव-भाव बड़े आकर्षक प्रतीत होते हैं और इन्हें देखने वाला बस इन्हें निहारता रहना चाहता है। यहाँ आने वाले लोग इन चित्रों के साथ सेल्फी लेना नहीं भूलते। इसके अलावा म्यूजियम में गांधी लाइब्रेरी भी बनाई गई है, जहां गांधी से जुड़ी कई उपयोगी पुस्तकें हैं। गांधी पर रिसर्च करने वाले छात्र-छात्राएं यहाँ के शांत वातावरण में बैठक कर अध्ययन कर करना पसंद करते हैं।

पिता के सपने को साकार करने के लिए बनाया म्यूजियम

मेवाड़ एजुकेशन सोसायटी अध्यक्ष गोविन्द लाल गदिया बताते हैं कि उनके पिता स्वर्गीय भंवरलाल गदिया गांधीवादी विचारों से समर्थक थे। उनके सपने को साकार करने के लिए ही उन्होंने अपने भाई यूनिवर्सिटी चांसलर डॉ. अशोक कुमार गदिया, मेंबर ऑफ़ बोर्ड राधाकृष्ण गदिया एवं यूनिवर्सिटी टीम के साथ मिल कर इस सपने को पूरा किया है। इस कार्य को पूरा करने में वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (डीन), डॉ. हरीश गुरनानी, डॉ. राजर्षि, सिद्दीक अहमद मंसूरी आदि का प्रमुख योगदान रहा है।

पत्रिका डिजिटल कनेक्ट
patrika.com
खबरों में लगे इन आइकन्स से जुड़िए patrika.com पर

मेवाड़ यूनिवरसिटी ने साकार किया गांधी म्यूज़ियम का सपना

जैसे लगता है 'बापू' ही विचर रहे हों इस आश्रम में

चित्तौड़गढ़. मेवाड़ विश्वविद्यालय में स्थापित बापू की प्रतिमा। पत्रिका

सोशल कनेक्ट
समाज सेतु

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

चित्तौड़गढ़। चित्तौड़गढ़ जिले के गंगरार स्थित मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने महात्मा गांधी से जुड़ी यादों को संजोने के लिए अनूठा कार्य कर दिखाया है। यूनिवर्सिटी में बेहद आकर्षक 'प्रभाष जोशी गांधी म्यूज़ियम' की स्थापना की गई है। म्यूज़ियम में स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान तत्कालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित महात्मा गांधी से सम्बंधित घटनाओं के समाचारों की मूल कतरनों को शानदार तरीके से सजाया गया है। साथ ही महात्मा गांधी की ओर से निकाले गए विभिन्न समाचार पत्रों जैसे नवजीवन (अंक 19 जून 1930), हरिजन (अंक 13 फरवरी 1949) आदि को भी प्रदर्शित किया गया है। इसमें गांधी जी के लेख देखे जा सकते हैं।

विदेशी पत्र पत्रिकाओं में गांधी

म्यूज़ियम में कई विदेशी मैगज़ीन एवं पत्र-पत्रिकाओं के कवर पेज हैं जिन पर महात्मा गांधी की तस्वीर छपी है। ये मैगज़ीन एवं पत्र-पत्रिकाएं अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पेनिश, इटालियन आदि भाषाओं में हैं। गांधी के जीवनकाल की अलग-अलग घटनाओं को तस्वीरों के माध्यम से एक क्रम में लगा कर प्रदर्शित किया गया है, जिसमें उनके पुराने अनदेखे फोटो और संक्षिप्त जानकारी है। यहां गांधी पर प्रकाशित कई डाक टिकटों का भी अनोखा कलेक्शन है। करीब सौ देशों द्वारा महात्मा गांधी पर निकाले गए स्टाम्प का संकलन भी यहां देखने को मिलता है। एक नज़र में यह म्यूज़ियम गांधी के हमारे ही आसपास होने का अहसास कराता है।

चित्तौड़गढ़ मेवाड़ विश्वविद्यालय में लगाई गई प्रदर्शनी। पत्रिका

साबरमती आश्रम की झांकी भी

गांधी म्यूज़ियम वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (डीन) के निर्देशन में बने इस गांधी म्यूज़ियम में प्रवेश करते ही साबरमती आश्रम की छोटी सी झांकी दिखाई देती है, जिसमें महात्मा गांधी को चरखा चलाते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति को रामकृष्ण घोष और उनकी टीम ने बनाया है। मूर्ति के पास गांधी की ओर से उपयोग में ली गई सामग्रियों की प्रतिकृति (रेप्लिका) दिखाई गई है। गांधी की तस्वीर वाले पुराने सिक्कों एवं मेडल का भी यहां अनोखा कलेक्शन है। इसके साथ ही गांधी पर प्रकाशित दर्जनों पोस्ट कार्ड एवं लिफाफों को भी संजो कर रखा गया है।

वह दुखदायी खबर भी है संरक्षित

यहां समाचार पत्र 'द स्टेट्समैन' की दिनांक 31 जनवरी 1948 की प्रति भी संरक्षित है, जिसमें गांधी के शहीद होने के खबर छपी हुई है। गांधी के भाषणों का संग्रह की हुई कई पुरानी किताबें भी यहां संभाल कर रखी गई हैं। म्यूज़ियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ चित्रलेखा सिंह बताती हैं कि क्षेत्र के सिद्दीक अहमद मंसूरी का इस संकलन में अहम योगदान रहा है। मंसूरी ने बचपन से ही महात्मा गांधी से जुड़ी कई महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह किया है, जो इस म्यूज़ियम को बनाने में काम आया है।

150 चित्रों के माध्यम से दिखाए महात्मा गांधी के आकर्षक हाव-भाव

म्यूज़ियम में प्रवेश करते ही दर्शक स्तब्ध रह जाते हैं, जब उनकी निगाह बाईं ओर स्थित एक दीवार पर जाती है। यहां ओम प्रकाश सालवी एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के विभिन्न उम्र में रहे हाव-भाव को सुन्दर चित्रकारी के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाया गया है। यहां आने वाले लोग इन चित्रों के साथ सेल्फी लेना नहीं भूलते। म्यूज़ियम में गांधी लाइब्रेरी भी बनाई गई है, जहां गांधी से जुड़ी कई उपयोगी पुस्तकें हैं। गांधी पर रिसर्च करने वाले छात्र-छात्राएं यहां के शांत वातावरण में बैठक कर अध्ययन कर करना पसंद करते हैं।

पिता के सपने को साकार करने के लिए बनाया म्यूज़ियम

मेवाड़ एजुकेशन सोसायटी अध्यक्ष गोविन्द लाल गदिया ने बताया कि उनके पिता भंवरलाल गदिया गांधीवादी विचारों के समर्थक थे। उनके सपने को साकार करने के लिए ही उन्होंने अपने भाई यूनिवर्सिटी चांसलर डॉ. अशोक कुमार गदिया, मेंबर ऑफ बोर्ड राधाकृष्ण गदिया एवं यूनिवर्सिटी टीम के साथ मिल कर इस सपने को पूरा किया है।

मेवाड़ यूनवर्सिटी ने साकार किया गांधी म्यूजियम का सपना

गांधी की यादों को संजोने के लिए किया अनूठा कार्य
पिता को गांधी से लगाव था, तो लगातार मेहनत कर बना दिया गांधी म्यूजियम

एजेन्सी @ जय कांठल न्यूज

चित्तौड़गढ़ 10 सितम्बर। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में जनकल्याणकारी राजस्थान सरकार महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने के लिए नई-नई योजनाएं लागू कर प्रभावी ि यान्वन सुनिश्चित कर रही है। इसी क्रम में चित्तौड़गढ़ जिले के गंगरार स्थित मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने महात्मा गांधी से जुड़ी यादों को संजोने के लिए अनूठा कार्य कर दिखाया है जिसकी काफी प्रशंसा हो रही है। यूनिवर्सिटी में बेहद आकर्षक ''प्रभाष जोशी गांधी म्यूजियम'' की स्थापना की गई है।

गांधी म्यूजियम में स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान तत्कालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित महात्मा गांधी से सम्बंधित घटनाओं के समाचारों की मूल कतरनों को शानदार तरीके से सजाया गया है। साथ ही गांधी द्वारा निकाले गए विभिन्न समाचार पत्र जैसे नवजीवन (अंक- 19 जून 1930), हरिजन (अंक- 13 फरवरी 1949) आदि को भी प्रदर्शित किया गया है, जिसमें गांधी जी के लेख देखे जा सकते है। म्यूजियम में कई विदेशी मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाओं जैसे- LE MIROIR DU MONDE (पैरिस), Le Petit Journal, La Domenica del Corriere (इटली), फ्रांस इलस्ट्रेशन, अगस्त ग्राफिक सर्वे आदि के कवर पेज है जिन पर महात्मा गांधी की तस्वीर छपी है। ये मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाएं अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, इटालियन आदि भाषाओं में है। इनका अवलोकन कर प्रतीत होता है कि उस समय गांधी का प्रकाश सिर्फ भारत ही नहीं, पूरे विश्व में फैल चूका था। गांधी के जीवनकाल की अलग-अलग घटनाओं को तस्वीरों के माध्यम एक 'म में लगा कर प्रदर्शित किया गया है, जिसमें उनके पुराने अनदेखे फोटो और संक्षिप्त जानकारी है। यहाँ गांधी पर प्रकाशित कई डाक टिकटों का भी अनोखा कलेक्शन उपलब्ध है। करीब सौ देशों द्वारा महात्मा गांधी पर निकाले गए स्टाम्प का संकलन भी यहाँ देखने को मिलता है।

वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (डीन) के निर्देशन में बने इस गांधी म्यूजियम में प्रवेश करते ही साबरमती आश्रम की छोटी-सी झांकी दिखाई देती है, जिसमें महात्मा गांधी को चरखा चलाते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति को रामकृष्ण घोष और उनकी टीम ने बनाया है। मूर्ति के पास गांधी द्वारा उपयोग में ली गई सामग्रियों की रेप्लिका दिखाई गई है। गांधी की तस्वीर वाले पुराने सिक्के एवं मेडल का भी यहाँ अनोखा कलेक्शन है। इसके साथ ही गांधी पर प्रकाशित दर्जनों पोस्ट कार्ड एवं लिफाफों को भी संजो कर रखा गया है। यहाँ समाचार पत्र 'द स्टेट्समेन' की दिनांक 31 जनवरी 1948 की प्रति भी संरक्षित है, जिसमें गांधी के शहीद होने के खबर छपी हुई है। गांधी के भाषणों का संग्रह किये हुए कई पुरानी डिस्क भी यहाँ संभाल कर रखी गई है।

म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह बताती है कि क्षेत्र के श्री सिद्दीक अहमद मंसूरी का इस संकलन में अहम योगदान रहा है। मंसूरी ने बचपन से ही महात्मा गांधी से जुड़ी कई महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह किया है, जो इस म्यूजियम को बनाने में काम आया है।

150 चित्रों के माध्यम से दिखाए महात्मा गांधी के आकर्षक हाव-भाव

म्यूजियम में प्रवेश करते ही

दर्शक एकाएक स्तब्ध रह जाते है, जब उनकी निगाह बाएं ओर स्थित एक दीवार पर जाती है। यहाँ म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह के मार्गदर्शन में ओम प्रकाश साल्वी एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के विभिन्न उम्र में रहे हाव-भाव को सुन्दर चित्रकारी के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाया गया है। विभिन्न मुद्राओं में गांधी जी के हाव-भाव बड़े आकर्षक प्रतीत होते है और इन्हें देखने वाला बस इन्हें निहारता रहना चाहता है। यहाँ आने वाले लोग इन चित्रों के साथ सेल्फी लेना नहीं भूलते। इसके अलावा म्यूजियम में गांधी लाइब्रेरी भी बनाई गई है, जहां गांधी से जुड़ी कई उपयोगी पुस्तकें है। गांधी पर रिसर्च करने वाले छात्र-छात्राएं यहाँ के शांत वातावरण में बैठक कर अध्ययन कर करना पसंद करते है।

पिता के सपने को साकार करने के लिए बनाया म्यूजियम

मेवाड़ एजुकेशन सोसायटी अध्यक्ष श्री गोविन्द लाल गदिया बताते है कि उनके पिता स्वर्गीय श्री भंवरलाल गदिया गांधीवादी विचारों से समर्थक थे। उनके सपने को साकार करने के लिए ही उन्होंने अपने भाई यूनिवर्सिटी चांसलर डॉ. अशोक कुमार गदिया, मेंबर ऑफ बोर्ड राधाकृष्ण गदिया एवं यूनिवर्सिटी टीम के साथ मिल कर इस सपने को पुरा किया है। इस कार्य को पुरा करने में वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (डीन), डॉ. हरीश गुरनानी, डॉ. राजर्षि, सिद्दीक अहमद मंसूरी आदि का प्रमुख योगदान रहा है।

मेवाड़ यूनिवरसिटी ने साकार किया गांधी म्यूजियम का सपना

जैसे लगता है 'बापू' ही विचर रहे हों इस आश्रम में

चित्तौड़गढ़. मेवाड़ विश्वविद्यालय में स्थापित बापू की प्रतिमा। पत्रिका

सोशल कनेक्ट
समाज सेतु

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

चित्तौड़गढ़। चित्तौड़गढ़ जिले के गंगरार स्थित मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने महात्मा गांधी से जुड़ी यादों को संजोने के लिए अनूठा कार्य कर दिखाया है। यूनिवर्सिटी में बेहद आकर्षक 'प्रभाष जोशी गांधी म्यूजियम' की स्थापना की गई है। म्यूजियम में स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान तत्कालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित महात्मा गांधी से संबंधित घटनाओं के समाचारों की मूल कतरनों को शानदार तरीके से सजाया गया है। साथ ही महात्मा गांधी की ओर से निकाले गए विभिन्न समाचार पत्रों जैसे नवजीवन (अंक 19 जून 1930), हरिजन (अंक 13 फरवरी 1949) आदि को भी प्रदर्शित किया गया है। इसमें गांधी जी के लेख देखे जा सकते हैं।

विदेशी पत्र पत्रिकाओं में गांधी

म्यूजियम में कई विदेशी मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाओं के कवर पेज हैं जिन पर महात्मा गांधी की तस्वीर छपी है। ये मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाएं अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, इटालियन आदि भाषाओं में हैं। गांधी के जीवनकाल की अलग-अलग घटनाओं की तस्वीरों के माध्यम से एक क्रम में लगा कर प्रदर्शित किया गया है, जिसमें उनके पुराने अनदेखे फोटो और संक्षिप्त जानकारी है। यहां गांधी पर प्रकाशित कई डाक टिकटों का भी अनोखा कलेक्शन है। करीब सौ देशों द्वारा महात्मा गांधी पर निकाले गए स्टाम्प का संकलन भी यहां देखने को मिलता है। एक नजर में यह म्यूजियम गांधी के हमारे ही आसपास होने का अहसास कराता है।

चित्तौड़गढ़ मेवाड़ विश्वविद्यालय में लगाई गई प्रदर्शनी। पत्रिका

साबरमती आश्रम की झांकी भी

गांधी म्यूजियम वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (डीन) के निर्देशन में बने इस गांधी म्यूजियम में प्रवेश करते ही साबरमती आश्रम की छोटी सी झांकी दिखाई देती है, जिसमें महात्मा गांधी को चरखा चलाते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति को रामकृष्ण घोष और उनकी टीम ने बनाया है। मूर्ति के पास गांधी की ओर से उपयोग में ली गई वस्तुओं की प्रतिकृति (रेप्लिका) दिखाई गई है। गांधी की तस्वीर वाले पुराने सिक्कों एवं मेडल का भी यहां अनोखा कलेक्शन है। इसके साथ ही गांधी पर प्रकाशित दर्जनों पोस्ट कार्ड एवं लिफाफों को भी संजो कर रखा गया है।

वह दुखदायी खबर भी है संरक्षित

यहां समाचार पत्र 'द स्टेट्समेन' की दिनांक 31 जनवरी 1948 की प्रति भी संरक्षित है, जिसमें गांधी के शहीद होने के खबर छपी हुई है। गांधी के भाषणों का संग्रह की हुई कई पुरानी डिस्क भी यहां संभाल कर रखी गई है। म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ चित्रलेखा सिंह बताती हैं कि क्षेत्र के सिद्दीक अहमद मंसूरी का इस संकलन में अहम योगदान रहा है। मंसूरी ने बचपन से ही महात्मा गांधी से जुड़ी कई महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह किया है, जो इस म्यूजियम को बनाने में काम आया है।

150 चित्रों के माध्यम से दिखाए महात्मा गांधी के आकर्षक हाव-भाव

म्यूजियम में प्रवेश करते ही दर्शक स्तब्ध रह जाते हैं, जब उनकी निगाह बाईं ओर स्थित एक दीवार पर जाती है। यहां ओम प्रकाश सत्यी एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के विभिन्न उम्र में रहे हाव-भाव को सुन्दर चित्रकारी के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाया गया है। यहां आने वाले लोग इन चित्रों के साथ सेल्फी लेना नहीं भूलते। म्यूजियम में गांधी लाइब्रेरी भी बनाई गई है, जहां गांधी से जुड़ी कई उपयोगी पुस्तकें हैं। गांधी पर रिसर्च करने वाले छात्र-छात्राएं यहां के शांत वातावरण में बैठकर अध्ययन कर करना पसंद करते हैं।

पिता के सपने को साकार करने के लिए बनाया म्यूजियम

मेवाड़ एजुकेशन सोसायटी अध्यक्ष गोविन्द लाल गदिया ने बताया कि उनके पिता भंवरलाल गदिया गांधीवादी विचारों के समर्थक थे। उनके सपने को साकार करने के लिए ही उन्होंने अपने भाई यूनिवर्सिटी चांसलर डॉ. अशोक कुमार गदिया, मैम्बर ऑफ बोर्ड राधाकृष्ण गदिया एवं यूनिवर्सिटी टीम के साथ मिल कर इस सपने को पूरा किया है।

मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने साकार किया गांधी म्यूजियम का सपना

>> पिता को गांधी से लगाव था, तो मेहनत कर बना दिया गांधी म्यूजियम

चित्तौड़गढ़, 10 सितम्बर (नसं.)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में जन कल्याणकारी राजस्थान सरकार महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने के लिए नई-नई योजनाएं लागू कर प्रभावी क्रियान्वन सुनिश्चित कर रही है। इसी क्रम में जिले के गंगरार स्थित मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने महात्मा गाँधी से जुड़ी यादों को संजोने के लिए बेहद आकर्षक 'प्रभाष जोशी गांधी म्यूजियम' की स्थापना की है।

गांधी म्यूजियम में स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान तत्कालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित महात्मा गांधी से सम्बंधित घटनाओं के समाचारों की मूल कतरनों को शानदार तरीके से सजाया गया है। साथ ही गाँधी द्वारा निकाले गए विभिन्न समाचार पत्र जैसे नवजीवन (अंक 19 जून 1930, हरिजन अंक-13 फरवरी 1949) आदि को भी प्रदर्शित किया गया है, जिसमें गांधी जी के लेख देखे जा सकते हैं। म्यूजियम में कई विदेशी मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाओं जैसे LE MIROIR DU MONDE (पैरिस) Le Petit Journal, La Domenica del Corriere (इटली), फ्रांस इलस्ट्रेशन, अगस्त ग्राफिक सर्वे आदि के कवर पेज हैं, जिन पर महात्मा गांधी की तस्वीर छपी हैं। ये मैगज़ीन एवं पत्र-पत्रिकाएँ अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, इटालियन आदि भाषाओं में है। इनका अवलोकन कर प्रतीत होता है कि उस समय गांधी का प्रकाश सिर्फ़ भारत ही नहीं, पूरे विश्व में फैल चुका था। गाँधी के जीवनकाल की अलग-अलग घटनाओं को तस्वीरों के माध्यम एक क्रम में लगा कर प्रदर्शित किया गया है, जिसमें उनके पुराने अनदेखे फोटो और संक्षिप्त जानकारी है। यहाँ गाँधी पर प्रकाशित कई डाक टिकटों का भी अनोखा कलेक्शन उपलब्ध है। करीब सौ देशों द्वारा महात्मा गांधी पर निकाले गए स्टाम्प का संकलन भी यहाँ देखने को मिलता है।

वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (डीन) के निर्देशन में बने इस गांधी म्यूजियम में प्रवेश करते ही साबरमती आश्रम की छोटी-सी झांकी दिखाई देती है, जिसमें महात्मा गांधी को चरखा चलाते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति को रामकृष्ण घोष और उनकी टीम ने बनाया है। मूर्ति के पास गाँधी द्वारा उपयोग में ली गई सामग्रियों की रेप्लिका दिखाई गई है। गांधी की तस्वीर वाले पुराने सिक्कों एवं मेडल का भी यहाँ अनोखा कलेक्शन है। इसके साथ ही गांधी पर प्रकाशित दर्जनों पोस्ट कार्ड एवं लिफाफों को भी संजो कर रखा गया है। यहाँ समाचार पत्र 'द स्टेट्समेन' की 31 जनवरी 1948 की प्रति भी संरक्षित है, जिसमें गांधी के शहीद होने के खबर छपी हुई है। गांधी के भाषणों का संग्रह किये हुए कई पुरानी डिस्क भी यहाँ संभाल कर रखी गई है।

म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह बताती है कि क्षेत्र के सिद्दीक अहमद मंसूरी का इस संकलन में अहम योगदान रहा है। मंसूरी ने बचपन से ही महात्मा गाँधी से जुड़ी कई महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह किया है, जो इस म्यूजियम को बनाने में काम आया है।

150 चित्रों के माध्यम से गांधीजी के हाव-भाव

म्यूजियम में प्रवेश करते ही दर्शक एकाएक स्तब्ध रह जाते हैं, जब उनकी निगाह बाएं ओर स्थित एक दीवार पर जाती है। यहाँ म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह के मार्गदर्शन में ओम प्रकाश साल्वी एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के विभिन्न उम्र में रहे हाव-भाव को सुन्दर चित्रकारी के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाया गया है। विभिन्न मुद्राओं में गांधीजी के हाव-भाव बड़े आकर्षक प्रतीत होते हैं और इन्हें देखने वाला बस इन्हें निहारता रहना चाहता है। यहाँ आने वाले लोग इन चित्रों के साथ सेल्फी लेना नहीं भूलते। इसके अलावा म्यूजियम में गांधी लाइब्रेरी भी बनाई गई है, जहां गांधी से जुड़ी कई उपयोगी पुस्तकें हैं। गांधी पर रिसर्च करने वाले छात्र-छात्राएं यहाँ के शांत वातावरण में बैठक कर अध्ययन कर करना पसंद करते हैं।

पिता के सपने को किया साकार

मेवाड़ एजुकेशन सोसायटी अध्यक्ष गोविन्द लाल गदिया बताते है कि उनके पिता स्व. भंवरलाल गदिया गांधीवादी विचारों से समर्थक थे। उनके सपने को साकार करने के लिए ही उन्होंने अपने भाई यूनिवर्सिटी चांसलर डॉ. अशोक कुमार गदिया, मेंबर ऑफ़ बोर्ड राधाकृष्ण गदिया एवं यूनिवर्सिटी टीम के साथ मिल कर इस सपने को पूरा किया है। इस कार्य को पूरा करने में वरिष्ठ प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डॉ. हरीश गुरनानी, डॉ. राजर्षि, सिद्दीक अहमद मंसूरी आदि का प्रमुख योगदान रहा है।